

डॉ. मार्क जेनिंग्स, मार्क, व्याख्यान 22, मार्क 14:26-72, अंतिम भोज, गिरफ्तारी, मुकदमा, और पतरस का इनकार

© 2024 मार्क जेनिंग्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. मार्क जेनिंग्स द्वारा मार्क के सुसमाचार पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 22 है, मार्क 14:26-72, अंतिम भोज, गिरफ्तारी, परीक्षण और पीटर का इनकार।

आपका स्वागत है क्योंकि हम मार्क अध्याय 14 पर काम करना जारी रखते हैं।

जब हम मार्क 14 की अपनी पिछली चर्चा में थे, तो हमने मंच तैयार कर लिया था, और हम अंतिम भोज और फसह के भोज से इसके संबंध और यीशु की मृत्यु के साथ होने वाले महान कार्य पर चर्चा कर रहे थे और इसे परमेश्वर के संदर्भ में स्थापित कर रहे थे, जो अपने लोगों को कैद से बचाता है, निर्गमन की कहानी यीशु द्वारा किए जा रहे कार्यों की ओर इशारा करती है। उसमें, हमने एक विश्वासघाती की घोषणा पर भी चर्चा की और कैसे यीशु ने खुलासा किया कि उनमें से एक विश्वासघात करेगा। और यह दिलचस्प है क्योंकि जब वे यीशु के साथ चर्चा कर रहे थे, इस बात से दुखी थे कि यीशु ने कहा था कि उनमें से एक विश्वासघात करेगा, तो वे सभी कह रहे थे, यह मैं नहीं हूँ, है न? यह मैं नहीं हूँ, यह मैं नहीं हूँ, और आप भी आश्चर्य करते हैं कि क्या थोड़ी सी भी आशा नहीं थी।

खैर, शायद यह हम में से सिर्फ एक ही है, है न? आप जानते हैं, यह मैं नहीं हूँ और इसलिए कोई और भी होगा। और फिर यह उस बात के लिए मंच तैयार करता है जिस पर हम अब नज़र डालने जा रहे हैं। और भले ही उनमें से सिर्फ एक ही विश्वासघाती है, लेकिन उन सभी ने यीशु को त्याग दिया।

और इसलिए, आइए हम इसे मार्क अध्याय 14 की आयत 26 से शुरू करें। और जब उन्होंने एक भजन गाया, जो फसह के अंत में गाया जाना उचित था, तो वे जैतून के पहाड़ पर चले गए। और यीशु ने उनसे कहा, तुम सब दूर चले जाओ।

क्योंकि लिखा है, कि मैं चरवाहे को मारूंगा, और भेड़ें तितर-बितर हो जाएंगी। परन्तु मैं अपने जी उठने के बाद तुम्हारे आगे आगे गलील को जाऊंगा। परन्तु पतरस ने उस से कहा, यदि वे सब ठोकर खाएं, तौभी मैं न खाऊंगा।

यीशु ने उससे कहा, “मैं तुझ से सच कहता हूँ कि इसी रात को मुर्गे के दो बार बाँग देने से पहले, तू तीन बार मेरा इन्कार करेगा।” उसने ज़ोर देकर कहा, “यदि मुझे तेरे साथ मरना भी पड़े, तो भी मैं तेरा इन्कार नहीं करूँगा।” और सब ने भी यही कहा।

यीशु की भविष्यवाणी कि वे सभी गिर जाएँगे, जकर्याह 13.7 से बहुत करीब से जुड़ी हुई है। ध्यान दें कि जकर्याह में, इसके लिए एक सर्वनाशकारी वास्तविकता है, पीड़ा का एक दिव्य कारण।

और, बेशक, चरवाहे की मृत्यु कहानी का अंत नहीं है, जो निश्चित रूप से, पतरस के लिए बहुत सांत्वनादायक रही होगी, लेकिन इसमें औचित्य और पुनर्स्थापना को ध्यान में रखा गया है। हालाँकि यहाँ कथन, आशा है, भले ही वे इसे न सुनें।

और फिर एक पुनरुत्थान की उपस्थिति है, भले ही यह इतना स्पष्ट न लगे। यह घोषणा करने के बाद कि वे सभी गिर जाएँगे, यीशु कहते हैं, मेरे जी उठने के बाद, मैं तुम्हारे आगे गलील जाऊँगा। और फिर वह संकेत, इस क्षण में पतरस के लिए आशा का यह संकेत है।

यीशु ने कहा कि वह गलील के सामने जाएगा। आप जानते हैं कि जब हम यहूदा और पतरस के बीच मतभेदों को देखते हैं, तो सुसमाचारों में से एक बात यह स्पष्ट रूप से बताई गई है कि उनमें उतना अंतर नहीं है जितना हम कभी-कभी मान लेते हैं, लेकिन कुछ महत्वपूर्ण अंतर हैं। बेशक, मैथ्यू इस बारे में बात करेगा कि वह पतरस के लिए कैसे प्रार्थना करता है।

हमें यहूदा के लिए ऐसी कोई प्रार्थना नहीं मिलती। और यहाँ यीशु पतरस से कहते हैं कि वह उन्हें गलील में फिर से देखेंगे। बेशक, यहाँ पतरस का विरोध और यीशु की फटकार मार्क 8, आयत 31 से 32 में हुई घटना की याद दिलाती है, जहाँ पतरस ने यीशु के मसीहा होने की घोषणा करने के बाद उसके अस्वीकार किए जाने की प्रवृत्ति के बारे में यीशु द्वारा कही गई बात को नकार दिया।

मेरा मतलब है, विडंबना यह है कि हम उस व्यक्ति के बारे में बात कर रहे हैं जिसकी मार्क के सुसमाचार में इस बात की पुष्टि करने और घोषणा करने के लिए प्रशंसा की गई थी कि यीशु ही मसीहा है, वही व्यक्ति इनकार करेगा। लेकिन यह आदान-प्रदान, यह विरोध जहाँ पतरस को एक बार फिर यीशु की बातों से परेशानी होती है जब यीशु कहते हैं कि वे सभी दूर हो जाएँगे और पतरस कहता है कि भले ही वे सभी दूर हो जाएँ, मैं नहीं जाऊँगा, और यहाँ तक कि ज़ोर देकर कहता है कि वह तुम्हें अस्वीकार नहीं करेगा। बेशक, वह कुछ ही छोटी आयतों में दूसरी तरफ़ एक बयान में ज़ोरदार होगा।

बेशक, ऐसा सिर्फ़ पतरस ही नहीं कहता; वे सभी यही कहते हैं। जो मज़बूत शिष्य कभी यीशु को अस्वीकार नहीं करेंगे, उन्हें अब गतसमनी के बगीचे में यीशु के प्रति अपनी वफ़ादारी प्रदर्शित करने का मौक़ा मिला है। और बेशक, उनकी विफलता जल्दी और तत्काल होगी।

आइए हम मार्क अध्याय 14 के श्लोक 32 से 42 में बगीचे को देखें। और उसने कहा, हे अब्बा, हे पिता, तेरे लिए सब कुछ संभव है। इस प्याले को मुझसे हटा ले, फिर भी वह नहीं जो मैं चाहता हूँ, बल्कि वह जो तू चाहता है।

फिर वह आया और उन्हें सोते हुए पाया और पतरस से कहा, “शमौन, क्या तू सो रहा है? क्या तू एक घंटा भी नहीं जाग सकता? जागते रह और प्रार्थना कर कि तू परीक्षा में न पड़। आत्मा तो तैयार है, परन्तु शरीर दुर्बल है।” फिर वह चला गया और वही बातें कहकर प्रार्थना करने लगा।

फिर आकर उन्हें सोते पाया, क्योंकि उनकी आंखें बहुत नींद से भरी थीं, और वे नहीं जानते थे कि उसे क्या उत्तर दें। फिर तीसरी बार आकर उससे कहा, क्या तू अब भी सो रहा है और विश्राम कर रहा है? बहुत हो गया। समय आ गया है।

मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथों में पकड़वाया गया है। उठो, चलें। देखो, मेरा पकड़वानेवाला निकट आ गया है।

मुझे लगता है कि इस अंश की संरचना यीशु के अकेलेपन या अलगाव के साथ-साथ शिष्यों की विफलता पर भी जोर देती है। देखिए यह कैसे आगे बढ़ता है। वह यहूदा को छोड़कर सभी शिष्यों के साथ आता है, भले ही यहाँ यहूदा का जाना स्पष्ट नहीं किया गया है।

मार्क को स्पष्ट रूप से नहीं पता कि यहूदा वास्तव में कब चला गया। व्यापक सुसमाचार कथा इसकी व्याख्या करती है। लेकिन यहूदा स्पष्ट रूप से इस बिंदु पर चला गया क्योंकि वह उस पहरेदार के साथ आया था जो आराम करेगा।

तो, यीशु शिष्यों के साथ आता है, पहले से ही एक शिष्य गायब था। और फिर वह तीन शिष्यों के साथ वापस चला जाता है, वे तीन शिष्य जिनके हम अब आदी हो चुके हैं, वे तीन शिष्य जिन्हें यीशु अक्सर अपने साथ ले जाता था। और फिर वह अकेले ही और आगे चला जाता है।

तो आप बगीचे में भी अलगाव की इस प्रगति को देखते हैं। हम यहाँ देखते हैं, आप जानते हैं, मार्क, तीनों के प्रति उनके प्रेम पर जोर दिया जा रहा है। तीन बार, यीशु शिष्यों को सोते हुए पाता है।

तीन बार वह उन्हें डांटता है। यह दोहराव, एक ही भाषा का बार-बार इस्तेमाल, जो हो रहा है उसे सामने लाता है। अगर आप रुचि रखते हैं, तो गेथसेमेन एक हिब्रू या अरामी शब्द है, शायद जैतून के प्रेस के लिए, जो समझ में आता है क्योंकि हम जैतून के पहाड़ पर हैं।

हम शायद ऐसी जगह की बात कर रहे हैं जो जैतून के बाग की तरह है, शायद जैतून को दबाने के लिए एक चक्की भी हो, जैसा कि हम यहाँ देखते हैं। लूका हमें बताता है कि यह एक ऐसी जगह है जहाँ यीशु नियमित रूप से जाते थे। और यह स्पष्ट रूप से एक ऐसी जगह भी है जहाँ यहूदा यीशु को ढूँढ़ने के लिए गया था।

यदि यह यीशु द्वारा आमतौर पर किए जाने वाले पैटर्न का हिस्सा था, तो अब यह गेथसेमेन में उनका एकांतवास है, और वहाँ जाकर आराम करना, निश्चित रूप से, यहूदा को वह अवसर देता है जिसकी वह तलाश कर रहा था, जो कि यीशु को भीड़ से अलग करना और गिरफ्तार किया जाना है। आप जानते हैं, यह दिलचस्प है जब हम इस मार्ग और सुसमाचार के कुछ अन्य तत्वों के बीच के संबंध के बारे में सोचते हैं। आप जानते हैं, मार्क 10:38 से 39 में, जेम्स और जॉन कहते हैं कि वे वह प्याला पी सकते हैं जिसे यीशु को पीना चाहिए।

मार्क 14:31 में, पतरस, बेशक, कहता है कि वह उन्हें निराश नहीं करेगा। लेकिन यहाँ, आप जानते हैं, यह चाल, यीशु द्वारा इस तरह की पीड़ा के माध्यम से बार-बार दोहराए जाने वाले

दोहराव, यीशु द्वारा अकेले ऐसा करना, उसका शोक। आपके पास यह धर्मी पीड़ित चित्र है, यह मेरी आत्मा, आप जानते हैं, जो स्वयं को संदर्भित करने का एक सेमिटिक या काव्यात्मक तरीका है, आप जानते हैं, मृत्यु के निकट है, कि वह इतने दुःख में है कि ऐसा लगता है जैसे वह मर रहा है।

मुझे लगता है कि यह एक काव्यात्मक कथन है। मुझे नहीं लगता कि यह ज़रूरी है कि वह इतना दुखी हो कि वह सचमुच मरने वाला हो, लेकिन यह एक काव्यात्मक अर्थ है, लगभग भजनों की तरह। और यीशु यहाँ प्रार्थना करते हैं, ठीक है, कि अगर यह संभव हो, तो वह घड़ी उनसे दूर हो जाए।

और घंटा शब्द, आप जानते हैं, एक शाब्दिक शब्द नहीं है, लेकिन यह आपको समय या इसकी अवधि बताने का एक तरीका है, या शायद एक परलोक संबंधी अर्थ भी है। और ध्यान दें कि हमें सीधा प्रवचन मिलता है। यह अब्बा, पिता है।

यह उन दुर्लभ अवसरों में से एक है जब यीशु प्रार्थना करते हैं, जहाँ हमें मार्क में प्रार्थना मिलती है। यह प्रार्थना करने का संदर्भ नहीं है, बल्कि मार्क में प्रार्थना है। हमें क्रूस से रोने में एक और मिलेगा।

यीशु का उल्लेख, निश्चित रूप से, प्रार्थना के बारे में और प्रार्थना पर शिक्षा देने के बारे में सुसमाचार में किया गया है, लेकिन यह वास्तव में पहली वास्तविक प्रार्थना है जो हमें मार्क में मिलती है। मुझे लगता है कि तब तक प्रतीक्षा करने का उनका विकल्प आकर्षक है। यहाँ अब्बा का उपयोग यीशु के लिए अद्वितीय है, जिसका अर्थ है कि यह कुछ ऐसा है जिसे यीशु ने विशिष्ट रूप से पेश किया है।

यह अंतरंगता का अभूतपूर्व स्तर है। हम पुराने नियम में जानते हैं कि ईश्वर कभी-कभी पिता या हमारे पिता के रूप में प्रकट होते हैं, खास तौर पर इस्राएल के लोगों के लिए। हम इसे मृतकों और हेलेनिस्टिक लेखन में भी देखते हैं।

लेकिन यहाँ अब्बा, इस व्यक्तिगत घोषणा और कॉर्पोरेट के संदर्भ में, अत्यंत अंतरंग है। हमें सावधान रहना चाहिए और केवल यह नहीं मान लेना चाहिए कि अब्बा का मतलब किसी तरह डैडी है, जैसा कि कभी-कभी संदर्भ में दिया जाता है, क्योंकि अक्सर वयस्क बच्चों द्वारा अपने पिता के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द होता है, क्योंकि हम आमतौर पर डैडी को छोटे बच्चों द्वारा कही जाने वाली किसी बात से जोड़ते हैं। अब्बा वयस्क बच्चों द्वारा कही जाने वाली कोई बात होती।

लेकिन वास्तव में ईसाई धर्म से पहले, पहली सदी से पहले के फिलिस्तीनी यहूदी धर्म में किसी व्यक्ति द्वारा ईश्वर द्वारा ऐसा व्यक्तिगत संबोधन कहीं और नहीं मिलता। हमारे पास एक प्याला है। मुझे लगता है कि यहाँ प्याला यह समझने के लिए महत्वपूर्ण है कि यीशु लगभग मृत्यु के करीब क्यों हैं।

पुराने नियम में कप पीड़ा के लिए एक आम छवि है। पुराने नियम में कप ईश्वरीय न्याय के लिए एक आम छवि है। अगर हम पुराने नियम को देखें, तो हम भजन 11, भजन 60, भजन 75, पीड़ा के विचार, यशायाह 51, यिर्मयाह 25, यिर्मयाह 49, यिर्मयाह 51, विलाप 4, यहेजकेल 23, हबक्कूक 2, जकर्याह 12 में कप के साथ जुड़े दुख और ईश्वरीय न्याय को देखते हैं।

और मुझे लगता है कि यहाँ मुख्य बात यह है कि यीशु जो प्रार्थना कर रहे हैं कि यह प्याला मुझसे दूर हो जाए, वह उस घटना की छवि है जो होने वाली है, जो कि परमेश्वर के न्याय, परमेश्वर के क्रोध का उंडेला जाना है। यह केवल एक काव्यात्मक कथन नहीं है, बल्कि यीशु केवल यह प्रार्थना नहीं कर रहे हैं कि यह शारीरिक पीड़ा, जो कि बहुत बड़ी होगी, उन्हें न मिले, बल्कि ईश्वरीय न्याय का उंडेला जाना भी उनसे न मिले। क्रूस पर जो कुछ घटित होगा, वह प्रभु के दिन की एक झलक, एक अद्वितीय व्यवस्था है, यदि आप चाहें तो।

प्रभु का दिन, जो कि न्याय का दिन है, क्रोध का दिन है जो सभी चीजों के अंत के साथ होगा जब सृष्टि का बहुत ही ढांचा हिलना शुरू हो जाएगा। यह वही है जो क्रूस पर विशिष्ट रूप से होता है लेकिन यीशु पर। और इसलिए यह वह जगह है, जहाँ, आप जानते हैं, जब क्रूस का चित्रण और यीशु की पुकार, कई लोग कहना चाहेंगे, और मैं इसे समझता हूँ, वे कहना चाहेंगे कि यह उस क्षण में था, आप जानते हैं, परमेश्वर पिता ने यीशु से मुंह मोड़ लिया, या कि किसी तरह परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र उस क्षण में किसी तरह अलग हो गए क्योंकि यीशु पर पाप था।

और मुझे लगता है कि जो कुछ हो रहा है वह वास्तव में गायब है। मुझे लगता है कि परमेश्वर पिता क्रूस पर पूरी तरह से मौजूद है, लेकिन वह अपने क्रोध में पूरी तरह से मौजूद है। जो हो रहा है वह यह है कि परमेश्वर पिता अपने न्याय का प्याला परमेश्वर पुत्र पर उंडेल रहा है।

यह उसका क्रोध है, और इस प्रकार यीशु प्रार्थना करता है कि यदि कोई ऐसा तरीका है जिससे उसे परमेश्वर का क्रोध न झेलना पड़े, तो वह चाहेगा कि वह उससे दूर हो जाए। और इसलिए, मुझे लगता है कि यह, आप जानते हैं, उस तनाव और दुःख को दर्शाता है जिसका वह सामना करने वाला है। और फिर भी, बेशक, यह अच्छी तरह से जानते हुए कि उस पर क्या डाला जाने वाला है, कि न्याय के दिन के आने का दिन विशेष रूप से उस पर होगा।

यह वह जगह है जहाँ, आप जानते हैं, धार्मिक रूप से, विचार यह होगा कि जो लोग मसीह में विश्वास करते हैं वे प्रभु के दिन का अनुभव करते हैं, लेकिन इसे यीशु के माध्यम से परोक्ष रूप से अनुभव करते हैं और इससे पीड़ित नहीं होते हैं। जो होने वाला है, उसके पूर्ण अहसास के बीच, यीशु कहते हैं, फिर भी वह नहीं जो मैं चाहता हूँ, बल्कि वह जो तुम चाहते हो। और परमेश्वर पुत्र और परमेश्वर पिता के बीच के रिश्ते का सुंदर प्रदर्शन, और कैसे परमेश्वर पुत्र परमेश्वर पिता की इच्छा के अधीन होता है और उसका पालन करता है।

वह एक आदर्श पीड़ित सेवक है। और वह आता है, बेशक, वह उसे सोता हुआ पाता है। उसने पतरस से कहा, शमौन, क्या तुम सो रहे हो? क्या तुम एक घंटे तक जाग नहीं सकते थे? यहाँ शमौन और अन्य शिष्य थे जो इतने आश्वस्त थे कि वे यीशु के साथ दृढ़ रह सकेंगे, और अब वे जाग भी नहीं सकते थे।

और आत्मा तो तैयार है, लेकिन शरीर कमज़ोर है। उस कथन के बारे में मेरी समझ यह है कि वह स्वीकार कर रहा है कि जब वे कहते थे कि वे उसके साथ रहेंगे तो वे वास्तव में ईमानदार थे, लेकिन वे शारीरिक रूप से ऐसा करने में असमर्थ थे। और फिर, वह चला जाता है और वही शब्द कहते हुए प्रार्थना करता है, और फिर वह आता है और उन्हें सोता हुआ पाता है, क्योंकि उनकी आँखें भारी थीं।

और, बेशक, दोहराव से यह स्थापित होता है कि यीशु फिर से उन्हें जागते रहने में सक्षम न होने के लिए डांटते हैं, और जिसके लिए, बेशक, शिष्यों के पास कोई प्रतिक्रिया नहीं होती है। आप जानते हैं, यह जवाब देने में असमर्थ होना श्लोक 40 में संकेत देता है कि वे जानते हैं कि वे गलत हैं। उन्होंने यीशु को विफल कर दिया है। और फिर तीसरी बार, वह उनसे कहता है, क्या तुम अभी भी सो रहे हो और आराम कर रहे हो? और अंत में, उसका मतलब है कि यह पर्याप्त है, जो मुझे लगता है कि पर्याप्त है, जो कि उनके कहने का तरीका है कि, रूपकात्मक रूप से कहें तो, यह हो गया।

यह है, हम अब हैं, हम अब उस क्षण पर पहुँच गए हैं, समय पर्याप्त है, प्रार्थना की प्रार्थना पूरी हो गई है, और यह पर्याप्त है, उत्तर पर्याप्त है, क्योंकि वह समय आ गया है। मनुष्य के पुत्र को पापियों के हाथों में सौंप दिया गया है। और निश्चित रूप से, मार्क के पाठकों के रूप में, हम अध्याय 8 से ही इस क्षण की ओर काम कर रहे हैं, जब से यीशु कह रहे हैं कि मनुष्य के पुत्र को सौंप दिया जाना आवश्यक है; अब हम जानते हैं कि यह क्षण आ गया है।

और मुझे यह भी दिलचस्प लगता है कि वह पापियों के हाथों में प्रयोग करता है, और मुझे लगता है कि यहाँ पापियों का संदर्भ दिलचस्प है, यह उनके ऊपर उनके निर्णय का संदर्भ हो सकता है, ठीक है, कि वे ऐसे ही हैं। बेशक, वहाँ कुछ विडंबना है, क्योंकि वह वही है जिस पर मार्क में पापियों के साथ होने का आरोप लगाया जाता है, और बेशक, यह प्रायश्चित्त करना मुश्किल नहीं है कि वह वास्तव में एक ऐसा व्यक्ति बनने वाला है जो केवल पापियों के लिए खड़ा है। और शायद वहाँ पापियों की भाषा का उपयोग यह सब दर्शाता है।

तो यहाँ वह क्षण है जब यीशु को मानव हाथों में सौंप दिया जाता है, और हम इसे श्लोक 43 से उठाते हैं। और जब वह अभी भी बोल रहा था, तो यहूदा आया, जो बारह में से एक था, और उसके साथ मुख्य पुजारियों, शास्त्रियों और बुजुर्गों की ओर से तलवारें और लाठियाँ लिए हुए एक भीड़ थी। अब, विश्वासघाती ने उन्हें यह कहते हुए एक संकेत दिया था, जिसे मैं चूमूँगा वह आदमी है।

उसे पकड़कर पहरे में छोड़ दो। जब वह आया, तो वह तुरन्त उसके पास गया और कहा रब्बी, और उसने उसे चूमा। उन्होंने उसे पकड़कर पकड़ लिया, परन्तु जो पास खड़े थे, उन में से एक ने तलवार खींचकर महायाजक के दास पर चला दी, और उसका कान उड़ा दिया।

यीशु ने उनसे कहा, " क्या तुम तलवारें और लाठियाँ लेकर मुझे पकड़ने के लिये निकले हो? मैं तो प्रतिदिन मन्दिर में तुम्हारे साथ प्रचार करता था, और तुम ने मुझे नहीं पकड़ा, परन्तु पवित्र शास्त्र

की बात पूरी होने दो।" तब सब उसे छोड़कर भाग गए। एक जवान अपने शरीर पर केवल एक चादर ओढ़े हुए उसके पीछे हो लिया, और उन्होंने उसे पकड़ लिया, परन्तु वह चादर छोड़कर नंगा भाग गया।

जब हम इस भाग को देखते हैं, बेशक, और फिर 53 के साथ, जहाँ वे यीशु को महायाजक के पास ले जाते हैं और परीक्षण की व्यवस्था करते हैं, तो हम यहाँ वह क्षण पाते हैं जब यीशु को मानव हाथों में सौंप दिया जाता है, लेकिन हम यह भी देखते हैं कि उसका अधिकार अभी भी कितना मौजूद है। बेशक, यहाँ यीशु को आज्ञाकारिता के प्रतिमान के रूप में कहा जा रहा है। हम मरकुस के अपने पूरे अध्ययन में इस बारे में बात करते रहे हैं, जहाँ शिष्यों का विश्वास की कमी वह बाधा बन जाती है जिसकी तुलना यीशु के अपने विश्वास से की जाती है।

और यहाँ आस्था की कमी पूरी तरह से सामने आती है। और बेशक, चुंबन का संकेत, ठीक है, यहूदा ने पहले से ही तय कर रखा था कि यह कैसे होगा, हम कैसे पहचानेंगे कि यीशु कौन है। एक, शायद यह अंधेरे में यह पहचानने में मदद करने का एक तरीका है कि वह व्यक्ति कौन है, अगर उसके साथ आने वाला यह समूह ठीक से नहीं जानता कि यीशु कैसा दिखता है।

लेकिन प्राचीन निकट पूर्व में तो और भी अधिक, चुंबन स्नेह और आतिथ्य का प्रतीक था। चर्च को एक दूसरे को चुंबन के साथ बधाई देनी होती है, जो इस क्षण को और भी अधिक दुखद बना देता है। मार्क स्ट्रॉस बताते हैं, मुझे लगता है कि यहाँ काफी प्रभावी ढंग से, कि कैसे नीतिवचन 27:6 और नीतिवचन 27:6 की सच्चाई यहाँ पाई जाती है।

दोस्त से मिले घाव पर भरोसा किया जा सकता है, लेकिन दुश्मन चुम्बनों को कई गुना बढ़ा देता है। हमारे पास यहाँ एक निश्चित आकृति का संदर्भ है जिसके पास तलवार है और वह एक नौकर के कान पर वार करती है। यह दिलचस्प है क्योंकि मार्क इस पल के बारे में बहुत रहस्यमय है।

हम नहीं जानते कि मार्क में वह कौन है जो वास्तव में तलवार निकालता है, यह सिर्फ एक निश्चित आदमी है। हम उस नौकर का नाम भी नहीं जानते जिसका कान कटा हुआ है। जॉन हमें बताता है कि यह पतरस है जिसके पास तलवार है।

नौकर मलखुस है। मैथ्यू और ल्यूक इस घटना का बहुत विस्तृत विवरण देते हैं। इसमें संवाद है, बातचीत है।

बेशक, लूका में यीशु ने उसे तलवारें साथ लाने का निर्देश दिया था। लेकिन फिर हमारे पास मैथ्यू और ल्यूक में भी है जहाँ यीशु ने इस कृत्य की निंदा की और घाव को ठीक किया, लेकिन हमें मार्क में ऐसा कुछ नहीं मिलता। वास्तव में, यह घटना, जिसका अभी उल्लेख किया गया है, यीशु के शब्दों के लिए लगभग तुरंत छोड़ दी गई है।

और मुझे लगता है कि तात्कालिकता का भाव यह है कि यीशु का इस तरह से, इस सैन्य रक्षात्मक तरीके से जवाब देने का कोई इरादा नहीं है। वास्तव में, मार्क के सुसमाचार में उनका ध्यान इस समूह की ओर बहुत अधिक है। और इसलिए, मार्क बहुत जल्दी हमले को विफल करने के इस प्रयास से दूर हो जाता है, अगर आप चाहें तो गिरफ्तारी और आने वालों को फटकार लगाता है।

वह उन्हें फटकार लगाता है। उसकी फटकार दोहरी है। सबसे पहले, वह उन्हें हथियारों के साथ आने के लिए फटकार लगाता है जैसे कि वे लुटेरे या विद्रोही हों, जो लोगों और स्थिरता के लिए खतरा हैं।

फिर भी वे इसे गुप्त रूप से करते हैं। जब वह मंदिर में शिक्षा दे रहा था, तो उनके पास कई अवसर थे, लेकिन उन्होंने कभी उनका लाभ नहीं उठाया। इसलिए, विडंबना यह है कि आप ऐसे आते हैं जैसे कि मैं कोई खतरा हूँ, लेकिन आप इसे सार्वजनिक रूप से करने से बहुत डरते थे क्योंकि आपको इस कार्य के बारे में खतरा महसूस हुआ।

इसलिए, वह पाखंड और गिरफ्तार करने वालों की पूरी कार्रवाई के बीच तनाव को भी चित्रित कर रहा है। लेकिन उसका अधिकार मौजूद हो जाता है। भले ही उसके बगल में ऐसे लोग हों जो तलवार खींच सकते हैं, भले ही गिरफ्तार करने वाला दल अपने तर्क के साथ असंगत हो, यीशु प्रतिरोध के मामले में उनमें से किसी पर भी खड़ा नहीं होता है, बल्कि कहता है कि वह जानता है कि शास्त्रों के अनुसार क्या होना चाहिए।

इसलिए, उसका अधिकार दिखाई देता है। और वास्तव में, जकर्याह 13:7 कहता है, चरवाहे को मारो, और भेड़ें तितर-बितर हो जाएँगी। इसलिए, यह शास्त्र न केवल यह भविष्यवाणी करता है कि मनुष्य के पुत्र को पकड़ लिया जाएगा और गिरफ्तार कर लिया जाएगा, बल्कि यह भी कि जब चरवाहा उसे पकड़ लेगा, तो भेड़ें तितर-बितर हो जाएँगी, यह तुरंत श्लोक 50 में आता है जहाँ वे सभी उसे छोड़कर चली गईं।

पतरस के प्रकरण को छोड़कर, शिष्यों का जाना आखिरी घटना है जिसके बारे में हम इन सभी घटनाओं के समाप्त होने तक सुनेंगे। और मार्क, वे वास्तव में चले गए हैं। वे वास्तव में चले गए हैं।

हमारे पास यह बहुत ही अजीब घटना है, और मेरे पास इसे वर्णित करने के लिए कोई और तरीका नहीं है सिवाय इसके कि श्लोक 51-52 अजीब हैं। एक युवक उसके पीछे-पीछे चल रहा था, जिसके शरीर पर सिर्फ एक सूती कपड़ा था। उन्होंने उसे पकड़ लिया, लेकिन वह सूती कपड़ा छोड़कर नंगा ही भाग गया।

यहाँ क्या हो रहा है, यह कौन हो सकता है, इस बारे में कई सुझाव दिए गए हैं। मुझे लगता है कि दो सबसे अच्छी संभावनाओं में से एक यह है कि इस युवक के शरीर पर केवल एक लिनन का कपड़ा क्यों है; मेरा मतलब है, इसलिए, किसी तरह वह गेथसेमेन का पीछा करने के लिए जल्दी से बाहर निकल गया, और उसके पास केवल यही था, लेकिन हम नहीं जानते। वह किसी तरह थोड़ी देर और रुका।

वह वहाँ जाता है जहाँ सभी शिष्य भाग गए थे। वह बस थोड़ी दूर तक पीछा करता है, लेकिन बहुत ज़्यादा देर तक नहीं। वास्तव में, वह नंगा ही भाग जाता है, जो कि बहुत शर्मनाक बात होगी।

दोनों सुझाव मूल रूप से यही हैं और शायद परस्पर अनन्य नहीं हैं। एक यह है कि यह एक ऐसा व्यक्ति है जिसके बारे में मार्क जिस समुदाय को लिख रहा है, वह जानता था, कि वे इस व्यक्ति के बारे में जानते हैं, और इसमें किसी ऐसे व्यक्ति का संदर्भ है जिसे वे जानते हैं। दूसरा, यह माना गया है कि शायद यह जॉन मार्क है, जो मार्क की अपनी आत्मकथात्मक प्रविष्टि का लेखक है जो यह दर्शाता है कि वह वहाँ वह व्यक्ति था, और फिर से, वे दोनों परस्पर अनन्य नहीं हैं।

मुझे लगता है कि आत्मकथात्मक कथन कुछ हद तक समझ में आता है क्योंकि यह घटना कहीं और नहीं मिलती है, और इसलिए मुझे लगता है कि जॉन मार्क खुद को एक विनम्र तरीके से संदर्भित कर रहा है। मेरा मतलब है, वह घोषणा करता है कि जब उसे इसके लिए दबाव डाला गया तो वह नग्न होकर भाग गया, इसलिए यह खुद को उच्च सम्मान के तरीके से पेश करने का क्षण नहीं होगा, बल्कि एक शर्मनाक तरीके से होगा। हालाँकि, श्लोक 53 के साथ, हम परीक्षण अनुक्रम शुरू करते हैं।

मार्क में दो परीक्षण दृश्य होंगे, एक यहूदी, जो महासभा के समक्ष होगा और फिर पिलातस के समक्ष एक रोमन। यहूदी सुनवाई का उद्देश्य स्पष्ट रूप से यीशु के विरुद्ध उपयोग किए जाने वाले साक्ष्य को संगठित करना है, जिससे रोमन गवर्नर से मृत्युदंड की सजा मिल सकती है; मैथ्यू मार्क का अनुसरण करता है, जबकि ल्यूक और जॉन के परीक्षणों में अतिरिक्त चरण हैं। जब हम यहाँ देखते हैं, तो हम देखते हैं कि मार्क मूल रूप से पाँच दृश्यों को विभाजित करता है, शायद थोड़ा सा मुस्कुराता हुआ सैंडविच भी, जहाँ आपके पास गिरफ्तारी का विवरण है और परीक्षण दो बार बाधित होता है, पहले पीटर के कुछ दूरी पर पीछा करने के बारे में एक बयान द्वारा, फिर पीटर के इनकार द्वारा।

हालाँकि, मुझे आश्चर्य है कि क्या हमें यहाँ सैंडविच के विचार को बहुत ज़्यादा ज़ोर देने से पहले सावधान रहने की ज़रूरत है, और यह सिर्फ दृश्यों का घुमाव हो सकता है, या हमें बता सकता है कि समवर्ती रूप से क्या हो रहा है। बेशक, इस पूरे मामले में हमारे सामने एक बहुत ही विपरीतता है। यीशु ईमानदारी से गवाही देते हैं कि वे मसीहा हैं।

पतरस इस बात से इनकार करता है कि वह यीशु को जानता भी है। यीशु गवाही देते हैं कि वे मसीहा हैं, जिसका मतलब है दुख। पतरस इस बात से इनकार करता है कि वह यीशु को जानता है और उसे इससे बचना चाहिए।

पीटर अपनी जान बचाने के लिए अपनी जान जोखिम में डाल रहा है, अपनी जान बचाने के लिए अपनी आत्मा को खो रहा है। अब, परीक्षणों की इस गिनती की ऐतिहासिकता को अक्सर इस आधार पर चुनौती दी गई है कि यह मिशनाह में जो पाया गया है उसका उल्लंघन करता है। सैनहेड्रिन और मृत्युदंड के मामलों के बारे में मिशनाह के अनुसार, एक, उन्हें रात में नहीं आजमाया जा सकता था, और दोषसिद्धि के लिए अगले दिन तक इंतजार करना पड़ता था, सब्त की पूर्व संध्या पर कोई भी परीक्षण नहीं किया जा सकता था, जो सब्त की पूर्व संध्या पर होता, त्योहारों के दौरान कोई भी परीक्षण नहीं किया जाना था, मृत्युदंड के लिए हमेशा दूसरी सुनवाई की आवश्यकता होती थी, मिशनाह कहता है कि विरोधाभासी साक्ष्य को खारिज किया जाना चाहिए, गवाहों को झूठी गवाही देने से मना किया जाता है, ईशनिंदा का आरोप केवल तभी

लगाया जा सकता है जब प्रतिवादी ने ईश्वरीय नाम का उच्चारण किया हो, यरूशलेम में तीन न्यायालयों में से केवल एक में ही परीक्षण किया जा सकता था और महायाजक का निवास उनमें से एक नहीं था।

और इसलिए, यह कहा गया कि यीशु का परीक्षण इन सभी का उल्लंघन करता है। अब, इस पर अलग-अलग प्रतिक्रियाएँ हैं। एक प्रतिक्रिया यह है कि, ठीक है, वे बहुत जल्दी और गुप्त रूप से ऐसा करने की कोशिश कर रहे थे और विनियमन का पालन करना उनके लिए उच्च प्राथमिकता नहीं थी।

हालाँकि, यह भी ध्यान रखें कि मिशना दूसरी सदी के अंत में इन परीक्षणों को संहिताबद्ध कर रहा है, इसलिए हम हमेशा यह सुनिश्चित नहीं कर सकते हैं कि दूसरी सदी के अंत में जिन प्रथाओं की मांग की गई थी या जिनकी अपेक्षा की गई थी, वे इस समय भी लागू हैं, कि मिशना में आने वाले वे नियम संभवतः उन दुर्व्यवहारों के कारण आए हैं जो हुए होंगे। इसके अलावा, यहाँ औपचारिक परीक्षण इतना नहीं है जितना कि पिलातुस के सामने यीशु के खिलाफ़ मामला पेश करना है। मिशना फरीसी प्रथाओं से भी अधिक का प्रतिनिधित्व करता है।

मार्क में, महासभा में अधिकतर सदूकी लोग हैं। यह संदेह नहीं है कि यीशु को पोंटियस पिलातुस के आदेश पर सूली पर चढ़ाया गया था, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हमें यीशु के यहूदी परीक्षणों की ऐतिहासिकता पर सवाल उठाने की ज़रूरत है, क्योंकि यह केवल रोमन ही थे जो सूली पर चढ़ा सकते थे या यह अनुचित लगता है। और इसलिए सवाल इस बात पर केंद्रित होता है कि यहूदी शासकों की क्या भूमिका थी? इस सब में उनकी क्या भूमिका थी? और मुझे लगता है कि जब हम इस पर विचार करते हैं, तो हमारे पास यहूदी नेताओं, यीशु के धार्मिक नेताओं की अस्वीकृति के स्पष्ट बयान हैं, कि अब उनके पास वह क्षण है जिसकी वे यीशु में दोष खोजने के लिए तलाश कर रहे थे, इसे गुप्त रूप से करने के लिए।

भीड़ से डरने वाले मुख्य पुजारी अब यीशु को नियंत्रित करने, यीशु को गिरफ्तार करने और पलों को नियंत्रित करने में सक्षम हैं। यीशु के खिलाफ उनके विरोध को एकजुट करने, उन पर ईशनिंदा का आरोप लगाने और साथ ही उन पर रोम के खिलाफ आरोप लगाने की ज़रूरत है। धार्मिक नेतृत्व के नजरिए से, यदि आप चाहें तो, यीशु की मृत्यु के कारण के लिए खड़े होने की ज़रूरत है, भले ही उनके पास ऐसा करने की शक्ति न हो।

आप जानते हैं, यहाँ हम इन लोगों को यीशु को मारने पर आमादा देखते हैं, हमें यह उम्मीद नहीं करनी चाहिए कि वे ऐसा करने के लिए प्रोटोकॉल का पालन करेंगे। अब, मार्क ने यह नहीं बताया कि यहाँ कौन सा महायाजक है जिसके पास वे जाते हैं। दूसरे कहते हैं कि यह कैफा है।

हम जानते हैं कि कैफा ने 18 से 36 ई. तक इस पद को संभाला था। वह अन्नास का दामाद था, जिसे 15 ई. में रोमनों ने पदच्युत कर दिया था। जोसेफस हमें बताता है कि अन्नास के पाँच बेटे और उसके दामाद ने उच्च पुजारी के रूप में सेवा की।

यह ऐतिहासिक रूप से उस बात से मेल खाता है जो हम अन्यत्र देखते हैं। हम जानते हैं कि तीन समूह थे जिन्हें संहेद्रिन बनाने के लिए लिया गया था, इसलिए संहेद्रिन के सभी लोग, यहाँ यह

संदर्भ संभवतः कोरम कहने का एक तरीका है। इसलिए, जब हम इस बात को देखते हैं, तो यह यहूदी साजिश में क्या हो रहा है, इसका सबूत है, अगर आप चाहें, तो भले ही यह पिलातुस ही है जो अंततः यीशु पर मृत्यु की घोषणा करता है, मुझे लगता है कि मार्क यह स्पष्ट रूप से इंगित करता है कि यह केवल रोमन नहीं थे जिन्होंने इसकी तलाश की थी।

और इसलिए आइए हम इस पर नज़र डालें कि हम यहाँ क्या देखते हैं। वे यीशु को महायाजक के पास ले गए, और सभी मुख्य याजक, बुजुर्ग और शास्त्री एक साथ आए। फिर से, मुझे लगता है कि इसका मतलब है परिषद, मुख्य याजक, बुजुर्ग और इन समूहों के शास्त्री।

पतरस कुछ दूरी पर उसका पीछा करता हुआ महायाजक के आँगन में चला गया। पतरस को वहाँ साहस का एहसास हुआ। और वह पहरेदारों के साथ बैठा हुआ था, आग के पास खुद को चेतावनी दे रहा था।

अब, महायाजक और पूरी महासभा यीशु को मार डालने के लिए उसके विरुद्ध गवाही ढूँढ़ रहे थे, परन्तु उन्हें कोई नहीं मिला। क्यों? क्योंकि बहुतों ने उसके विरुद्ध झूठी गवाही दी, परन्तु उनकी गवाही एक दूसरे से मेल नहीं खाती थी। तब महायाजक ने बीच में खड़े होकर यीशु से पूछा, क्या तेरे पास कोई उत्तर नहीं है? ये लोग तेरे विरुद्ध क्या गवाही देते हैं? पद 60.

लेकिन वह चुप रहा और कोई जवाब नहीं दिया। फिर, महायाजक ने उससे पूछा, क्या तुम मसीह हो, धन्य का पुत्र? तो, यह इस समय है, ऐसा लगता है कि, आप जानते हैं, ऐसा लगता है कि जैसे कि अब मुकदमा यीशु के रास्ते पर जा रहा है, कि ऐसे लोग हैं जो उसके खिलाफ झूठी गवाही दे रहे हैं। उदाहरण के लिए, श्लोक 58 में, वे उसे नष्ट करने के आरोप में फंसाने की कोशिश कर रहे हैं, कि वह हाथों से बनाए गए मंदिर को नष्ट कर देगा और तीन दिन में दूसरा बना देगा, लेकिन वे, आप जानते हैं, वे सहमत नहीं हैं।

वे अपनी गवाही में सहमत नहीं हैं। दिलचस्प बात यह है कि, बेशक, यह वास्तविक कथन वह नहीं है जो हम यीशु से हाल ही में मंदिर में सुनते हैं, कि वह इसे नष्ट कर देगा; उसका मंदिर मानव हाथों से बनाया गया था, और तीन दिनों में, वे एक और मंदिर बनाएंगे, जो हाथों से नहीं बना होगा। हमारे पास वास्तव में जॉन के सुसमाचार से यह कथन है, जहाँ मंदिर में यीशु समान गतिविधियाँ करते हैं, हालाँकि जुनून सप्ताह में जो कुछ भी है उससे थोड़ा सा बदलाव भी है, और निश्चित रूप से जॉन के लिए यह सुसमाचार में बहुत पहले होता है, जहाँ यीशु यह कथन करते हैं।

और मुझे लगता है, आप जानते हैं, यह बहस जिसके बारे में हमने बात की है, यह विचार कि, क्या यीशु ने मंदिर में दो बार प्रवेश किया या एक बार और इसे कहानी के दो भागों में विभाजित किया गया है, मुझे लगता है कि यह तथ्य कि गवाह वास्तव में यीशु द्वारा मंदिर के विनाश से संबंधित बयानों पर सहमत नहीं हैं, यह पुष्टि करता है कि दो अलग-अलग गतिविधियाँ थीं, कि समय बीतने के साथ ऐसा हुआ था न कि केवल कुछ दिन पहले इन धार्मिक नेताओं की उपस्थिति में दिए गए बयान। इसलिए, मुझे लगता है कि यह हो सकता है कि, वास्तव में, आप जानते हैं, यीशु, निश्चित रूप से, हम जॉन के सुसमाचार से जानते हैं, एक से अधिक अवसरों पर यरूशलेम में प्रवेश किया, और यह उस पहले अवसर पर था जब उन्होंने मंदिर में जो कुछ हो रहा था उसके लिए

घृणा भी दिखाई थी, जिसके लिए उन्होंने ये बयान दिए थे। लेकिन परीक्षण ठीक से नहीं चल रहा है, और यीशु जवाब नहीं दे रहे हैं, और उन्हें जवाब देने की आवश्यकता नहीं है, और फिर हमने उच्च पुजारी को उनसे विशेष रूप से पूछा, क्या आप मसीहा हैं, धन्य के पुत्र? और धन्य का पुत्र, बेशक, एक ऐसा शब्द है जिसे हमने बहुत ज़्यादा नहीं अपनाया है, और इसलिए यह शब्द की ऐतिहासिकता को दर्शाता है। धन्य का पुत्र मसीहा कहने का एक और तरीका है, आप जानते हैं, मसीहा की पहचान ईश्वर के पुत्र के रूप में, आप जानते हैं, इसका एक हिस्सा होता।

तो, यह सवाल यह नहीं है कि क्या यीशु ईश्वरीय हैं और क्या वे धन्य के पुत्र हैं। यह सवाल यह है कि क्या यीशु सोचते हैं कि वे मसीहा हैं। इस सेटिंग में, महायाजक बीच में खड़े हो गए, बेशक, मुझे लगता है, सूखे हाथ वाले आदमी को याद करते हुए जिसे सबके बीच में खड़े होने के लिए कहा गया था।

यीशु की चुप्पी यशायाह 53:7 के समान है, ऊन कतरने वालों के सामने भेड़ें चुप रहती हैं। और यह सवाल, बेशक, बहुत ही चौंकाने वाला है। हम सोचते हैं कि मरकुस में क्या हो रहा है।

यीशु सक्रिय रूप से इस पहचान को कमज़ोर कर रहे हैं। अब, मार्क में, कुछ मसीहाई निहितार्थ हैं जिन्हें यीशु ने अपनाया है। उदाहरण के लिए, यरूशलेम में गधे पर एक लेखन है।

लेकिन यहाँ हमारे पास एक खास सवाल है, और यह सवाल, ज़ाहिर है, यीशु अपने पूरे सुसमाचार में आते रहे हैं। पहले आठ अध्यायों में, सवाल हमेशा यही थे: यह कौन है जो ऐसे काम कर सकता है? कौन इतने अधिकार से बोल सकता है? कौन चंगा कर सकता है? यह कौन है जो तूफानों को शांत कर सकता है? और इसलिए, आपके मन में ये सारे सवाल थे कि यीशु कौन है। मार्क हमें ये सारे सवाल बता रहा है।

फिर, बेशक, मार्क 8 में, हम खुद यीशु को पतरस से यह सवाल पूछते हुए पाते हैं, लोग क्या कहते हैं? और चेलों, लोग क्या कहते हैं कि मैं कौन हूँ? तुम क्या कहते हो कि मैं कौन हूँ? लेकिन अब यीशु से यह सवाल खास तौर पर पूछा गया: क्या तुम मसीहा हो? और यीशु ने मार्क 6:2 में जवाब दिया, मैं हूँ, और तुम मनुष्य के पुत्र को सामर्थ्य के दाहिने हाथ बैठे और स्वर्ग के बादलों के साथ आते देखोगे। मैं इस अर्थ में लगभग आश्चर्यचकित हूँ, अगर यहाँ पूरा मुकदमा एक धागे से लटका हुआ नहीं होता, और अगर यीशु चुप रहता, तो शायद मुकदमा उसके हिसाब से होता। और इसलिए, चुप न रहने का उसका फैसला महासभा में धार्मिक नेताओं को वह देता है जो वे चाहते थे, जो कि उस पर आरोप लगाने का एक अवसर है।

और वह उन्हें राजनीतिक और धार्मिक रूप से उन पर आरोप लगाने का अवसर देता है। उसके उत्तर के लिए, एक यह है कि वह बहुत ही स्पष्ट रूप से घोषणा करता है, हाँ, मसीहाई रहस्य, यदि आप चाहें, तो समाप्त हो गया है। वह घोषणा करता है कि वह वास्तव में मसीहा है।

इससे उन्हें वह राजनीतिक गोला-बारूद मिल जाता है जिसकी उन्हें ज़रूरत होती है। इससे उन्हें पिलातुस के पास जाने और यह कहने का मौक़ा मिलता है कि वह एक राजनीतिक शासक बनने की कोशिश कर रहा है, रोम के खिलाफ़ लोगों को एकजुट करने और अविश्वास पैदा करने की

कोशिश कर रहा है। लेकिन फिर यह भी कहकर कि वे मनुष्य के पुत्र को देखेंगे, वास्तव में यह दूसरा उत्तर है जो और भी ज़्यादा विद्रोही हो जाता है।

यह दूसरा पहलू है जहाँ वे मनुष्य के पुत्र को स्वर्ग के बादलों में आते देखेंगे। यह दानियेल 7:13 से 14 तक आता है, जहाँ मनुष्य के पुत्र की तरह, प्राचीन दिनों से पहले स्वर्ग के बादलों पर आता है और उसे महिमा और प्रभुत्व और एक अनन्त राज्य दिया जाता है। मेरा मानना है कि यीशु यहाँ जो करता है वह यह है कि वह कहता है, न केवल मैं मसीहा हूँ, बल्कि मैं मनुष्य का पुत्र हूँ।

और मनुष्य का पुत्र जो आता है, आप जानते हैं, और उसे प्रभुत्व दिया जाता है, यह एक संदर्भ है कि आने वाला परीक्षण होगा, कि तुम मेरे न्याय के लिए खड़े हो, लेकिन एक समय आएगा जब मैं, मनुष्य के पुत्र के रूप में, तुम्हारे न्याय के लिए खड़ा होऊंगा। और, ज़ाहिर है, इस बिंदु पर उच्च पुजारियों के लिए कोई अन्य प्रतिक्रिया नहीं है। वे या तो, आप जानते हैं, पुष्टि कर सकते हैं कि यीशु ने जो कहा है वह सच है, या उन्हें उसे अब ईशनिंदा करने के लिए घोषित करना चाहिए, जो कि वे वस्त्र फाड़ने और यह घोषणा करने में करते हैं कि हमें और किस गवाह की आवश्यकता है।

तुमने उसकी निन्दा सुनी है, आयत 64, तुमने उसकी निन्दा सुनी है। तुम्हारा क्या निर्णय है? और सबने उसे मृत्युदंड के योग्य ठहराया। और कुछ लोग उस पर थूकने लगे और उसका मुँह ढकने लगे और उसे मारने लगे, और उससे कहने लगे, भविष्यवाणी कर। और पहरेदारों ने उसे मार-पीट कर पकड़ लिया।

और इसलिए, यहाँ पद्य में, आप जानते हैं, 65 तक, हम देखते हैं कि यहूदियों का मुकदमा समाप्त हो जाता है, और यह इस घोषणा के साथ समाप्त होता है कि यीशु ने पुष्टि की कि वह मसीहा है, पुष्टि की कि वह मनुष्य का पुत्र है, और उनके द्वारा उसे अस्वीकार कर दिया गया, और उसे मृत्युदंड दिया जाना चाहिए। विडंबना यह है कि यह उसकी मृत्यु ही है जो उसके मसीहा होने के दावे की वैधता को सामने लाती है और यह कि वह मनुष्य का पुत्र है। हम इसे 66 से 72 तक देखते हैं, और हम इसके बारे में थोड़ी देर बाद और अधिक जानकारी प्राप्त करेंगे, लेकिन शायद यहाँ मार्क 14 पर समाप्त करने के लिए, हम अब पीटर पर वापस आते हैं।

तो, यह सब चल रहा है। यीशु का इन सभी धार्मिक नेताओं के सामने कड़ा रुख जो दावा करते हैं कि वह मसीहा, परमेश्वर का पुत्र है। 66 से 72 में, हम पतरस को आंगन में नीचे देखते हैं, और महायाजक की एक दासी आती है।

मुझे लगता है कि विचार यह है कि वह शायद नौकर लड़कियों के साथ काम कर रही है। यह एक छोटी महिला हो सकती है; भाषा इस बात की अनुमति देती है कि यह छोटी लड़की नहीं होनी चाहिए। और पीटर को खुद को गर्म करते हुए देखकर, उसने उसकी ओर देखा और कहा, "तुम नासरी यीशु के साथ थे।"

उसने यह कहते हुए इनकार कर दिया कि, मैं न तो जानता हूँ और न ही समझता हूँ कि तुम्हारा क्या मतलब है। यह कहने का एक और तरीका है, मुझे नहीं पता कि तुम किस बारे में बात कर

रहे हो। और वह गेटवे में चला गया, जो मुझे लगता है कि वह गेटवे में ज़्यादातर इसलिए बाहर जाता है क्योंकि वह उस दासी लड़की से अलग होने की कोशिश कर रहा है जिसने उसे पहचान लिया है, लेकिन यह उसे ज़रूरत पड़ने पर जल्दी से बाहर निकलने का मौका भी देता है।

और मुर्गे ने बांग दी। और नौकरानी ने उसे देखा और कहने लगी, हे खड़े आदमी, यह आदमी उनमें से एक है। तो अब ध्यान दें कि वह सीधे पीटर पर आरोप नहीं लगा रही है।

अब वह अन्य लोगों को भी इसमें शामिल कर रही है। शायद ये अन्य नौकर हों, या शायद वे शांति बनाए रखने के लिए या पहरेदारों के लिए भी वहां मौजूद हों, वगैरह। लेकिन फिर से, उसने इससे इनकार किया।

थोड़ी देर बाद, पास खड़े व्यक्ति ने पतरस से कहा; निश्चय ही तुम उनमें से एक हो, क्योंकि तुम गलीली हो। और मार्क हमें यह नहीं बताता कि वे क्यों जानते हैं कि वह गलीली है। बेशक, दूसरा सुसमाचार उसके भाषण और, संभवतः, उसके उच्चारण को स्पष्ट करता है।

लेकिन यहाँ पर यह बात समझ में आती है कि यह समूह किसी निष्कर्ष पर पहुँच गया है। हाँ, वह अवश्य ही होगा। वह उनमें से एक अवश्य ही होगा क्योंकि वह गैलीलियन है।

हम जानते हैं कि यीशु गलील से हैं। और फिर पतरस की प्रतिक्रिया, मुझे लगता है, आपको उसके इनकार का सार दिखाती है। वह खुद पर एक अभिशाप का आह्वान करने लगा और कसम खाने लगा, मैं उस आदमी को नहीं जानता जिसके बारे में तुम बात कर रहे हो।

ईएसवी का अनुवाद यही है। यह दिलचस्प है क्योंकि ग्रीक में, यह सिर्फ इतना कहता है कि उसने शपथ लेना शुरू किया और शाप का आह्वान किया। यह स्पष्ट नहीं है कि शाप का लक्ष्य कौन है।

वास्तव में, जिस भाषा का उपयोग किया जाता है, उसका तात्पर्य उस विशिष्ट प्रतिवर्ती भाषा से हो सकता है। आम तौर पर, जब आप किसी को शाप देते हैं, तो आप किसी व्यक्ति या किसी चीज़ पर शाप देते हैं। इसलिए, कई विकल्प हैं।

पहला यह कि पतरस ने खुद पर श्राप लगाया, और मार्क इसे एक तरह से प्रस्तुत कर रहा है जो कि उससे अलग है। दूसरा यह कि वह वास्तव में यीशु पर श्राप लगा रहा है, यीशु को श्रापित घोषित कर रहा है। और तीसरा यह कि वह उन लोगों पर श्राप लगा रहा है जो उस पर आरोप लगा रहे हैं।

यह विचार कि ईश्वर आपके खिलाफ कुछ करेगा क्योंकि आपने मुझे झूठा कहा है, एक तरह का विचार है। तीनों में से कोई भी नहीं, और मुझे लगता है कि तीनों में से सबसे कम संभावना वाला, यह वही हो सकता है जिसे ESV ने यहाँ चुना है, जो खुद पर एक अभिशाप का आह्वान कर रहा है। तीनों में से कोई भी नहीं, मुझे लगता है कि हम समझते हैं कि शपथ और अभिशाप की भाषा पीटर जो कह रहा है उसकी सच्चाई की पुष्टि करने के हिस्से के रूप में ईश्वर को बुलाने के दो तरीके हैं।

पीटर का ईश्वर के प्रति शपथ लेना ही विचार होगा, और वह यह भी घोषणा कर रहा है कि ईश्वर किसी को शाप देगा, आप जानते हैं, इस आरोप के कारण। तो, सोचिए कि यहाँ क्या हो रहा है। यहाँ यीशु धार्मिक नेताओं के सामने खड़ा है और घोषणा कर रहा है कि वह मसीहा है और वह मनुष्य का पुत्र है, और वे यीशु पर ईशनिंदा कर रहे हैं। उसी समय, पीटर, अपनी नौकरानी और उसके आस-पास के लोगों की बातों से डरकर घोषणा करता है कि उसका यीशु से कोई लेना-देना नहीं है और ईश्वर उसकी बातों की प्रामाणिकता को प्रमाणित कर सकता है।

मेरा मतलब है, पतरस के दो इनकारों के बीच का अंतर सिर्फ़ इतना नहीं है कि मैं नहीं जानता कि आप किस बारे में बात कर रहे हैं, बल्कि यह है कि उसने अपने इनकार की ताकत में परमेश्वर को शामिल किया है। यह पतरस को धार्मिक नेताओं के बहुत करीब लाता है, जो यीशु को ईशनिंदा घोषित करते हैं, यीशु को शापित घोषित करते हैं। आप जानते हैं, ईशनिंदा घोषित करने का मतलब यह घोषित करना होगा कि यीशु परमेश्वर के लोगों से बाहर है, अब है, उसने परमेश्वर के कानून का उल्लंघन किया है।

पतरस अपने झूठ में उस कथन के बहुत करीब है। वह यीशु के साथ खड़े होने की तुलना में वही काम करने के बहुत करीब है, जिसके बारे में उसने बहुत साहसपूर्वक कहा था कि वह ऐसा करेगा। पतरस को याद आया, और फिर तुरंत मुर्गे ने दूसरी बार बाँग दी, और पतरस को याद आया कि यीशु ने उससे कैसे कहा था, मुर्गे के तीन बार बाँग देने से पहले, तू मुझे तीन बार अस्वीकार करेगा।

वह टूट गया और रोने लगा। तो यहाँ यीशु ने इसकी भविष्यवाणी की थी और सटीक भविष्यवाणी सच हुई थी, जिसका शायद पतरस को उस पल एहसास नहीं हुआ, लेकिन उस पल में उम्मीद थी कि यीशु ने मुर्गे और उसके इनकार के बारे में जो कहा था वह सच हुआ। उम्मीद है क्योंकि यीशु ने यह भी कहा था, मैं तुम्हें फिर से गलील में देखूंगा।

और इसलिए, अगर यीशु यहीं हैं, तो उम्मीद है कि वे वहाँ भी होंगे। और पतरस टूट गया और रोने लगा। और मुझे लगता है कि जब हम पतरस और यहूदा के बीच के अंतरों को देखते हैं, तो सुसमाचारों में कई अंतर हैं।

पतरस के बारे में कभी नहीं कहा गया कि शैतान ने उसे प्रेरित किया है। पतरस को कभी भी दुःख नहीं दिया गया। पतरस के बारे में यीशु कहते हैं कि उन्होंने उसके लिए प्रार्थना की है।

मैंने तुम्हारे लिए प्रार्थना की, पतरस। हमें यहूदा के बारे में यीशु द्वारा कही गई किसी बात का विवरण नहीं मिलता कि मैंने तुम्हारे लिए प्रार्थना की, यहूदा। और यहाँ पतरस रोता है और तुरंत पहचानता है कि उसने क्या किया है, शायद उसके दुःख का एक संकेत भी।

यह हमें मार्क अध्याय 14 के अंत तक ले आता है। हम अगली बार मार्क 15 और यीशु के मुकदमे और क्रूस पर चढ़ने के बारे में बात करेंगे।

यह डॉ. मार्क जेनिंग्स द्वारा मार्क के सुसमाचार पर दी गई शिक्षा है। यह सत्र 22, मार्क 14:26-72,

अंतिम भोज, गिरफ्तारी, मुकदमा और पीटर का इनकार है।